Volume: 5 Issue: 4 Pages: 149-151

विज्ञान वर्ग और कला वर्ग के छात्राओं में शांति जागरूकता के प्रति सकारात्मक सोच का अध्ययन।

[*1] जगदीश कुमार

[*1] असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री रामेश्वर दास अग्रवाल कन्या महाविद्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश, भारत।

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (QJIF): 8.4
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 22/March/2026
Accepted: 20/April/2026

***Corresponding Author**
जगदीश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री रामेश्वर दास अग्रवाल कन्या महाविद्यालय हाथरस, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश
देश की उन्नति नए राष्ट्र निर्माण में छात्र छात्राओं एवं युवा वर्ग की भूमिका जग जाहिर है युवा शक्ति देश को नई दिशा प्रदान करने की क्षमता रखता है। आदर्श समाज एवं सभ्य समाज के लिए युवा वर्ग प्रभावीसामाजिक राजनैतिक सांस्कृतिक धार्मिक अंत: क्रिया संचालित करता है इसलिए युवा वर्ग में शांति जागरूकता की अभिक्रियाएं एव अभिव्यक्ति होनी चाहिए प्रस्तुत शोध पत्र में न्यादर्श एव जनसंख्या के चयन में विज्ञान वर्ग और कला वर्ग छात्राओं को रखा गया है। जिसमें पाया गया कि इनमें सार्थक अंतर नहीं है।

मुखये शब्द: शांति जागरूकता, विज्ञान वर्ग, कला वर्ग, नैतिक आचरण प्रेम, सौहार्द, करुणा, परोपकार

प्रस्तावना:

मानव जीवन को पशुवत जीवन से उबारने के लिए शिक्षा अप्रत्यक्ष प्रत्यक्ष रूप में मार्गदर्शन करती है यह उत्तम गुणों का निर्धारण तथा व्यवहारों में वांछनीयता लाती है। गुणवत्ता एवं लक्ष्य निर्धारण में शांति जागरूकता और आचरण नैतिकता छात्र जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण को जन्म देती है। यह मानवीय अवधारणाओं को गहराई प्रदान करता है। यह भी स्पष्ट है कि यह मानवता का प्रति पूरक है वसुधैव कुटुमकम का यह मूल मंत्र भी है। शांति जागरूकता तथा आचरण नैतिकता समाज में आदर्श परंपराओं, रीति रिवाज,मान्यता को आदर्श स्वरूप प्रदान करते हैं।

शांति जागरूकता: व्यक्ति और समाज में आपसी भाई-चारा प्रेम, सौहार्द को को केंद्र बिंदु मानकर आदर्श जीवन जीने की शैली प्रदाता है। सामाजिक अंतर क्रिया में व्यक्ति और समाज में शांति के महत्व मूल्य निर्मान और व्यवहारों के प्रति समझ तथा संवेदनशीलता का विकसित होना शांति जागरूकता है। शांति जागरूकता के विशिष्ट पहलुओं के रूप में अहिंसा, सहिष्णुता, संवाद और समझ से सामाजिक एकता का निर्माण होना शांति जागरूकता का उत्तम स्वरूप है।

नैतिक आचरण: नैतिक आचरण मानवता का द्योतक है नैतिक आचरण नैतिक व्यवहारों, नैतिक कृत्यों ऐसा पुंज है जो उत्तम आचरण, श्रेष्ठ आचरण, आदर्श आचरण है । नैतिक आचरण के वास्तविक स्वरूप में ईमानदारी सत्य निष्ठा निष्पक्षता उत्तरदायित्व सम्मान जैसे नैतिक सिद्धांतों के अनुसार व्यवहार करना है यह समाज में सही और गलत के बीच अंतर को स्पष्ट करते हुए कानून का पालन करते हुए दूसरों के प्रति सद्भावना और जिम्मेदारी से कार्य करने की एक नैतिक प्रतिबद्धता है यह व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन में विश्वास पैदा करता है ।

शोध कार्य की आवश्यकता एवम् महत्व

वर्तमान परिवेश में भारतीय समाज भौतिक सुखों को आत्मसात कर लिया है। भौतिक सुखों की चाहत में मानव प्राकृतिक संसाधन, सामाजिक संसाधन, भौगोलिक संसाधन इत्यादि का अंधाधुन उपयोग कर रहा है जिसमें वह प्रेम, सौहार्द, करुणा, परोपकार, त्याग, सहिष्णुता को बगल में कर के अपने आकांक्षाओं एवं महत्वाकांक्षाओ की पूर्ति कर रहा है। शोधार्थी ने विज्ञान वर्ग तथा कला वर्ग के छात्रों में शांति जागरूकता (peace education) का स्तर को जानने और

समझ ने का प्रयास विद्यालयी स्तर पर किया है। आंकड़े, निष्कर्ष, परिणाम के आधार पर वर्तमान परिवेश के परिपेक्ष्य में सुझाव प्रस्तुत कर किया जा सकता है शैक्षिक समावेशन, सामाजिक समावेशन, राजनैतिक समावेशन, तथा अंतरराष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर पर चल रहे तनाव को कम करने के लिए शांति जागरूकता एवं नैतिक आचरण की अहम भूमिका है। शोधार्थी इसी को आधार मानकर शोध पत्र में शीर्षक का चयन किया है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

मानव और मानव सभ्यता, संस्कृति,संस्कार का अस्तित्व नैतिक आचरण एवं शांति जागरूकता के अभाव में सुरक्षित नही है। शोध कार्य संबंधित साहित्य का अध्ययन पूर्व में किए गए शोध कार्यों एवं परिणाम की व्याख्या की पुष्टि करता है शोधार्थी द्वारा चुने गए शोध समस्या के निष्पत्ति एवं उद्देश्यों परिकल्पनाओं के निष्पादन में सो साहित्य का अध्ययन मार्गदर्शन का कार्य करता है

1. **महात्मा गांधी जी की सत्य का प्रयोग:** गांधी जी सत्य का प्रयोग दार्शनिक सिद्धांतों, मूल्यो में शांति एवं नैतिक आचरण अहिंसा परमो धर्म: के रूप समाज में शांति जागरूकता नैतिक आचरण की महत्ता एवं आवश्यकता पर विशेष बल देता है। गांधी जी के दार्शनिक दृष्टिकोण इसी प्रकार का ताना-बाना तैयार करते हैं, जो शांति जागरूकता एवं नैतिक आचरण मानव जीवन के लिए भोजन एवं संतुलित आहार के बाद सबसे अनिवार्य और आवश्यक कड़ी है।
2. **स्वामी विवेकानंद का कर्म योग:** स्वामी विवेकानंद द्वारा सुप्रसिद्ध दार्शनिक दृष्टिकोण पर आधारित "कर्म योग" मानव जीवन का सार है फल की इच्छा कीये बिना मानव सेवा करना ही निष्काम भाव है। निष्काम भाभी मुक्ति का साधन है निष्काम भाव ही मानव को चिंता, तनाव, भेद -भाव इत्यादि अधिक मुक्त रखता है। कर्म योग के सारांश में शांति जागरूकता, नैतिक आचरण की महत्ता दिखाई पड़ती है।
3. **शांति शिक्षा:** मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय भोपाल में संचालित पुस्तक Peace Education शोधार्थी की समस्या का उत्तम स्रोत है। इसके सारांश में मानव जीवन की प्रगति व विकास के लिए शांति आवश्यक है जिसे बनाए रखना एक लिए मानव मूल्य आवश्यक होते हैं कुछ मूल्य एवं आचरण अंतर्भुत होते हैं प्रेम, सत्य। शांति जागरूकता कुछ मूल्य का योगदान विशेष रहता है।

प्रेम: प्रेम जीवन की ऊर्जा है यह एक ऐसा शब्द है जिसे सुनते ही हमारा मन अंदर एवं बाहर से पुलकित हो उठता है। यह गहरी स्नेह और लगाव का प्रतीक होता है।

करुणा: मनुष्य का एक अति उत्तम शीलगुण करूणा है जो सभी जीव जंतुओं के प्रति दया भावना को जन्म देती है इसे उदार, दयालु, सदाशय आदि माना गया है। करुणा परोपकार का प्रमुख घटक है जब हमने करुणा जाती है तो हम उसके कासन को दूर करने के लिए बेचैन हो उठते हैं और सहायता का हाथ बना देते हैं।

सत्य: सत्य एक ऐसी अवधारणिया अवस्था है जो मन में अंतिम प्रमाण को जन्म देती है इसकी परिभाषा करना कठिन है सत्य एक शाश्वत है अपरिवर्तनशील और अटल है।

अहिंसा: अहिंसा किसी भी जीव या प्राणी को कष्ट पहुंचाने से परहेज करने की स्थिति है समुदायों समाज ऑन राष्ट्रों के बीच उपदेश संघर्षों को दूर करने इसका प्रमुख उद्देश्य है

समस्या कथन: "विज्ञान वर्ग और कला वर्ग के छात्राओं में शांति जागरूकता के प्रति सकारात्मक सोच का अध्ययन"।

शोध कार्य से जुड़ी निर्गत समस्या संबंधी उद्देश्य

1. कला वर्ग के छात्राओं में शांति जागरूकता के प्रति सकारात्मक सोच एवं दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
2. विज्ञान वर्ग की छात्राओं में शांति जागरूकता के प्रति सकारात्मक सोच एवं दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
3. विज्ञान वर्ग और कलावर्ती छात्राओं में शांति जागरूकता के प्रति सकारात्मक सोच एवं दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

शोध कार्य से जुड़ी परिकल्पनाएं इस प्रकार से निम्न हैं -

1. विज्ञान वर्ग की छात्राओं में शांति जागरूकता के प्रति सकारात्मक सोच सार्थक अंतर नहीं है।
2. कला वर्ग की छात्राओं में शांति जागरूकता के प्रति सकारात्मक सोच सार्थकअंतर नहीं है।
3. विज्ञान वर्ग एवं कला वर्ग की छात्राओं में शांति जागरूकता के प्रति सकारात्मक सोच सार्थक अंतर नहीं है।

अध्ययन का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए अलीगढ़ मंडल के हाथरस जनपद के दो कन्या इंटर कॉलेज का चयन किया गया है।

1. रामचंद्र गर्ल्स इंटर कॉलेज चावडगेट हाथरस।
2. सुरजो बाई गर्ल्स इंटर कॉलेज किला गेट हाथरस
3. इस अध्ययन में केवल बालिका कॉलेज को सम्मिलित किया गया है को एजुकेशन से जुड़े शैक्षणिक संस्थान को शोध का हिस्सा नहीं बनाया गया है।
4. इस शोध कार्य में केवल अशासकीय विद्यालयों की छात्राओं चयन किया गया है।
5. इस शोध कार्य में व्यावसायिक वर्ग के छात्र-छात्राओं का चयन नहीं किया गया है केवल विज्ञान वर्ग एवं कला वर्ग की छात्राओं को शोध कार्य का हिस्सा बनाया गया है।

शोध कार्य में प्रयुक्त शब्दों का अर्थपान

1. **कला वर्ग की छात्राये:** वे छात्राएं अपने अध्ययन में हिन्दी संस्कृत अंग्रेजी सामाजिक विज्ञान अर्थ शास्त्र, इतिहास, भूगोल, इत्यादि साहित्य वर्ग के विषयों में शिक्षण कार्य कर रही है
2. **विज्ञान वर्ग:** वे छात्राएं जो अध्ययन करने के लिए विज्ञान की विषय वस्तु को धारण करने के लिए गणित, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान जीव विज्ञान, आदि अध्ययन कर रही है।
3. **शांति जागरूकता:** शांति बनाने के लिए प्रत्येक दशा में चैतन्य बने रहना, शांति स्थापित करने के लिए तत्पर रहना, आशावान सोच रखना, शांति धारण करने के लिए चेतना में रहना शांति जागरूकता ही है। प्रेम सौहार्द करुणा परोपकार त्याग सहिष्णुता और अहिंसा को धारण करना शांति जागरूकता है।
4. **उच्चतर माध्यमिक विद्यालय:** वे शिक्षण संस्थाएं जिम कक्षा 8 से कक्षा 12 तक के छात्राएं अध्ययन कर रहे हैं वह उत्तर माध्यमिक विद्यालय है।

शोध कार्य में प्रयुक्त सामग्री

1. राम चंद्र कन्या इंटर कॉलेज हाथरस की विज्ञान वर्ग की छात्राये
2. सुरजो बाई कन्या इंटर कॉलेज किला हाथरस की कला वर्ग की छात्राये
3. शांति जागरूकता मापनी (सुनीता मोगरे और राखी गिरिराजन) इस मापनी में 40 आइटम हैं जो इसकी संरचना में मौद्रिक जोखिम, शारीरिक जोखिम, सामाजिक जोखिम, नैतिक जोखिम सम्मिलित हैं।

शोध विधि सो धरती ने शोधार्थी ने ने शोध प्रकृति को देखते हुए शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है सुधारते हाथरस जनपद के दो गर्ल्स इंटर कॉलेज का चयन किया है।

अनुसंधान में प्रयुक्त उपकरण

1. **सुनीता मोगरे तथा राखी गिरिराजन:** इस शोध कार्य में उपकरण के रूप में शांति जागरूकता मापनी का प्रयोग किया गया है।
2. **न्यादर्श:** प्रस्तुत शोध पत्र में न्यादर्श के रूप में 80 छात्राएं रामचंद्र गर्ल्स इंटर कॉलेज चावल गेट हाथरस तथा 80 छात्राएं सुरजो बाई गर्ल्स इंटर कॉलेज किला गेट हाथरस से ले गई है।

प्रयुक्त सांख्यिकी

1. इस शोध कार्य में कुछ संबंधी आंकड़ों के निष्पादन में सांख्यिकी की प्रक्रिया के रूप में मध्यमान, मानक विचलन तथा टी टेस्ट का प्रयोग किया गया है।
2. इस शोध कार्य को परिणाम तक ले जाने के लिए तथा शोध अध्ययन विधि को स्पष्ट करने के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण प्रस्तुत शोध कार्य के लिए प्रदत्त का लन में शांति जागरूकता स्तर मापने का के लिए विज्ञान वर्ग और कला वर्ग छात्राओं द्वारा आंकड़े एकत्रित किया गया जो निम्नवत है –

तालिका 1

क्रम संख्या	तुल्य समूह	आदर्श	मध्यमान	मानक विचलन	टी -मान
1	विज्ञान वर्ग की छात्राये	80	142.25	15.32	0.78
2	कला वर्ग की छात्राये	80	139.80	8.30	

सारणी विवेचन

उपरोक तालिका से प्राप्त आंकड़ों के अवलोकन से एक परिश्य उभरता है कि विज्ञान वर्ग की छात्राओं तथा कला वर्ग की छात्राओं में शांति जागरूकता का मध्यमान 142.25 तथा 139.80 है प्राप्त मध्यमानों से ज्ञात होता है कि विज्ञान वर्ग की छात्राये में कला वर्ग की छात्राओं से सकारात्मकता उच्च है। मानक विचलन के परिणामों से स्पष्ट होता है कि कला वर्ग की छात्राओं में शांति जागरूकता स्तर और विज्ञान वर्ग की छात्राओं कि शांति जागरूकता स्तर अधिक सामानता है। प्राप्त टी गणना मान.78 है जो 68 स्वतंत्रता के अंशों और 0.05 विश्वास स्तर पर "टी"तालिका का मान 1.91से कम है इस स्थिति में विज्ञान वर्ग की छात्राओं तथा कला वर्ग की छात्राओं में शांति जागरूकता सोच स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है यह स्वीकार की जाती है।

निष्कर्ष:

प्राप्त आंकड़ों एवं तालिका सांख्यिकी विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष निकलता है कि विज्ञान वर्ग छात्राएं और कला वर्ग की छात्राओं से मध्यमान परिणाम के आधार पर शांति जागरूकता सोच स्तर सामान्य अधिक है और मानक विचलन की सारणी सी स्पष्ट होता है कि विज्ञान वर्ग और कला वर्ग की छात्राओं में शांति जागरूकता एवं नैतिक आचरण समान हैं जब कि टी टेस्ट का मान से स्पष्ट होता है कि विज्ञान वर्ग और कला वर्ग की छात्राओं में शांति जागरूकता स्तर में सार्थक अंतर नहीं है पाया गया।

संदर्भ सूची:

1. Mahapatra Dr Haripadi, Mandal Dr. Udayan, Adhikari Amit Maity, Dr Arun**Relevance of Peace and value education in present day education system**red'shine Publication ISBN 9781387719365
2. सिंह सौरभ**मूल्य और शांति शिक्षा**अग्रवाल पब्लिकेशन 1 जनवरी 2021 ISBN 13 978- 9386311245
3. सक्सेना डॉ अल्का और यादव डॉ ललित**मूल्य और शांति शिक्षा**ठाकुर पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड लखनऊ ISBN 978-93-5480-242-3
4. यादव डॉ सुनील, कुमार डॉ आशीष**मूल्य शिक्षा**महावीर बुक्स पब्लिशर 1 जनवरी 2024 ISBN 978-9365783880
5. Mitra Dr Nita, Bask Dr Ritupurna ** Relevance of Peace and value education in Modern World**Indian Books and periodicals ISBN 13 9789389234848
6. शर्मा गिरधारी लाल**शांति शिक्षा और सतत विकास**अग्रवाल पब्लिकेशन (अग्रवाल ग्रुप ऑफ पब्लिकेशन) 11अगस्त 2024 ISBN 13 978-9357037389
7. पड़ालिया डॉ भावना **शांति शिक्षा और विकास** पेसिफिक बुक्स इंटरनेशनल 2023 ISBN 13 9789392469060
8. महर्षि ओशो**युद्ध और शांति (भागवत गीता का मनोविज्ञान) डायमंड पॉकेट बुक प्रा. लिमिटेड 1 जनवरी 2007
9. अब्बासी डॉ आयशा, सोनी डॉ रश्मि, **मूल्य एवं शांति शिक्षा **ठाकुर पब्लिकेशन लखनऊ ISBN 978-93- 89516-20 -3
10. विश्व शांति और भावी शिक्षा भारतीय शिक्षा शोध संस्थान लखनऊ।
11. चांद किरण**शिक्षा समाज विकास**कनिष्क पब्लिशर्स नई दिल्ली।
12. सिंह संध्या, कैथवास श्रीमती आरती, पाण्डेय अनुराधा**शांति शिक्षा औरएवं सतत् विकास**राज्य शिक्षा परिषद इलाहाबाद, कंप्यूटर कंपोजिंग राजेश यादव।